नमाज़

इबादते किस तरह आदमी को उस बड़ी और असली इबादत के लिए तैयार करती हैं जिसके लिए अल्लाह ने जिन्न और इनसान को पैदा किया है। इस सिलसिले में सबसे बड़ी और सबसे अहम चीज़ नमाज़ है।

इबादत का अस्ल मफ़हूम

यह तो आपको मालूम हो चुका है कि इबादत असल में बन्दगी को कहते हैं और जब आप ख़ुदा के बन्दे ही पैदा हुए हैं तो आप किसी वक़्त, किसी हाल में भी उसकी बन्दगी से आज़ाद नहीं हो सकते। जिस तरह आप यह नहीं कह सकते कि मैं इतने घण्टे या इतने मिनटों के लिए ख़ुदा का बन्दा हूँ और बाक़ी वक़्त में मैं उसका बन्दा नहीं हूँ, इसी तरह आप यह भी नहीं कह सकते कि मैं इतना वक़्त ख़ुदा की इबादत में सर्फ़ करूँगा और बाक़ी वक़्तों में मुझे आज़ादी है कि जो चाहूँ करूँ। आप तो ख़ुदा के पैदाइशी ग़ुलाम हैं। उसने आपको बन्दगी ही के लिए पैदा किया है। इसलिए आपकी सारी ज़िन्दगी उसकी बन्दगी में सर्फ़ होनी चाहिए और कभी एक लम्हे के लिए आपको उसकी इबादत से ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिए।

यह भी मैं आपको बता चुका हूँ कि इबादत के मानी दुनिया के काम–काज से अलग होकर एक कोने में बैठ जाने और अल्लाह–अल्लाह करने के नहीं हैं, बल्कि हक़ीक़त में इबादत के मानी यह हैं कि इस दुनिया में आप जो कुछ भी करें, ख़ुदा के क़ानून के मुताबिक़ करें। आपका सोना और जागना, आपका खाना और पीना, आपका चलना और फिरना, ग़रज़ कि सब कुछ ख़ुदा के क़ानून की पाबन्दी में हो। आप जब अपने घर में बीवी–बच्चों, भाई–बहनों और रिश्तेदारों के पास हों तो उनके साथ इस तरह पेश आएँ, जिस तरह ख़ुदा ने हुक्म दिया है। जब अपने दोस्तों में हँसें और बोलें, उस वक़्त भी आपको ख़याल रहे कि हम ख़ुदा की बन्दगी से आज़ाद नहीं हैं। जब आप रोज़ी कमाने के लिए निकलें और लोगों से लेन–देन करें, उस वक़्त भी एक–एक बात और एक–एक काम में ख़ुदा के हुक्मों का ख़याल रखें और कभी उस हद से न बढ़ें जो ख़ुदा ने मुक़र्रर कर दी है। जब आप रात के अँधेरे में हों और कोई गुनाह इस तरह कर सकते हों कि दुनिया में कोई आपको देखनेवाला न हो, उक्त भी आपको याद रहे कि ख़ुदा आपको देख रहा है और हक़ीक़त में डर उसी का होना चाहिए न कि दुनिया के लोगों का। जब आप जंगल में अकेले जा रहे हों और वहाँ कोई जुर्म इस तरह कर सकते हों कि किसी पुलिसमैन और किसी गवाह का खटका न हो तो उस वक़्त भी आप ख़ुदा को याद करके डर जाएँ और जुर्म से हाथ खींच लें। जब आप झूठ, बेईमानी और ज़ुल्म से बहुत–सा नफ़ा कमा सकते हों और कोई आपको रोकनेवाला न हो तो उस वक़्त भी आप ख़ुदा से डरें और उस फ़ायदे को इसलिए छोड़ दें कि ख़ुदा इससे नाराज़ होगा। और जब सच्चाई और ईमानदारी में आपको सरासर नुक़सान पहुँच रहा हो, उस वक़्त भी आप नुक़सान उठाना पसन्द कर लें, सिर्फ़ इसलिए कि ख़ुदा इससे ख़ुश होगा। इस तरह सिर्फ़ दुनिया हो छोड़कर कोनों और गोशों में जा बैठना और तसबीह हिलाना इबादत नहीं है, बल्कि दुनिया के धंधों में

फँसकर ख़ुदा के क़ानून की पाबन्दी करना इबादत है। अल्लाह के ज़िक्र का मतलब यह नहीं है कि ज़बान पर अल्लाह–अल्लाह जारी हो, बल्कि असल अल्लाह का ज़िक्र यह है कि दुनिया के झगड़ों और बखेड़ों में फँसकर भी आपको हर वक़्त ख़ुदा याद रहे, जो चीज़े ख़ुदा से ग़ाफ़िल करनेवाली हैं उनमें मश्गूल हों और फिर ख़ुदा से ग़ाफ़िल न हों। दुनिया की ज़िन्दगी में जहाँ ख़ुदाई क़ानून को तोड़ने के बहुत–से मौक़े बड़े–बड़े फ़ायदों के लालच और नुक़सान का डर लिए हुए आते हैं, वहाँ आप ख़ुदा को याद करें और उसके क़ानून की पैरवी क़ायम रहें। यह है ख़ुदा की असली याद। इसका नाम है ज़िक्रे इलाही और इसी ज़िक्र की तरफ़ क़ुरआन मजीद में इशारा किया गया है– यानी, जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ, ख़ुदा के फ़ज़ूल यानी हलाल रोज़ी की खोज में दौड़–धूप करो और (इस दौड़–धूप में) ख़ुदा को ज़्यादा–से–ज़्यादा याद करो, ताकि तुम्हें कामयाबी नसीब हो।

बन्दगी का एहसास

सबसे पहले तो इस बात की ज़रूरत है कि आपको बार–बार यह याद दिलाया जाता रहे कि आप ख़ुदा के बन्दे हैं और उसी की बन्दगी आपको हर वक़्त, हर काम में करनी है। यह याद दिलाने की ज़रूरत इसलिए है कि एक शैतान, आदमी के नफ़्स में बैठा हुआ है जो हर वक़्त कहता रहता है कि तू मेरा बन्दा है।

तू किसी का बन्दा नहीं, सिर्फ़ ख़ुदा का बन्दा है। यही काम नमाज़ करती है।

इसी लिए दिन में पाँच वक़्त नमाज़ फ़र्ज़ की गई, ताकि जो लोग मुसलमान होने का दावा करते हैं, उनका बार–बार इमतिहान लिया जाता रहे कि वे वाक़ई मुसलमान हैं या नहीं और वाक़ई इस अमली ज़िन्दगी में ख़ुदा के हुक्मों को पूरा करने के लिए मुस्तैद हैं या नहीं। अगर वे ख़दाई परेड का बिगुल सुनकर हिलते तक नही ंतो साफ़ मालूम हो जाता है कि वे इस्लाम की अमली ज़िन्दगी के लिए तैयार नहीं हैं।

इताअत की मश्क

और जो लोग खुदा की बन्दगी और उसका हुक्म मानने के लिए तैयार नहीं है, सिर्फ उन्हीं को नमाज़ बोझ मालूम होती है। और जिसको नमाज़ बोझ मालूम हो वाह खुद इस बात का सबूत पेश करता है कि वह खुदा की बन्दगी व इताअत के लिए तैयार नहीं है।

(कुरआन,2:45)

नमाज़ वह चीज़ है जो आदमी को बदी और बेहयाई से रोकती है।

(कुरआन,29: 45)

नमाज़ में आप क्या पढ़ते हैं ?

अज़ान और उसके असरात–

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर।
अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है।

अश्हदु अल्ला इला–ह इल्लल्लाह।
मैं गवाही देता हूँ कि ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं, कोई बन्दगी का हक़दार नहीं।

अश्हदु अन–न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह।
मैं गवाही देता हैं कि मुहम्मद (सल्ल0) अल्लाह के रसूल हैं।

हय–य अलस्सलाह।
आओ नमाज़ के लिए।

हय–य अलल फ़लाह।
आओ उस काम के लिए जिसमें भलाई ही भलाई है!

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर।
अल्लाह सबसे बड़ा है।

ला इला–ह इल्लल्लाह।
अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है।

वुज़ू

अश्हदु अल्ला इला–ह इल्लल्लाह, वह्दहु ला शरी–क लहु, व अश्हदु अन–न मुहम्मद अब्दुहू व रसूलुहू । अल्लाहुम्मज अलनी मिनत्तव्वा बी–न, व ज अलनी मिनल मु–त–तह हिरीन।

मैं गवाही देता हूँ कि अकेले एक लाशरीक ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं है और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद(सल्ल0) अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं। ऐ अल्लाह ! मुझे तौबा करने वालों में शामिल कर और मुझे पाकीज़गी इख़तियार करनेवाला बना।

तसबीह

सुब्हा–न–क अल्लाहुम–म व बि हमदि–क, व तबा–र कस्मु–क, व त आ़ला जद्दु–क वला इला–ह ग़ैरू–क।

तेरी पाकी बयान करता हूँ ऐ अल्लाह और वह भी तेरी तारीफ़ के साथ! बड़ी बरकतवाला है तेरा नाम; सबसे बुलन्द व बरतर है तेरी बुज़ुर्गी और कोई माबूद नहीं तेरे सिवा।

तअ़व्वुज़

अ ऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम।

ख़ुदा की पनाह माँगता हूँ मैं शैतान मरदूद की दरअन्दाज़ी और शरारत से।

तस्मिया

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

शुरू करता हूँ मैं अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान और रहम फ़रमानेवाला है।

हम्द–

अल्हम्दु लिल्लाहि रबिलि आ़लमीन

तारीफ ख़ुदा के लिए है जो सारे जहानवालों का पालनहार है।

अर्रहमानिर्रहीम

निहायत रहमतवाला बड़ा मेहरबान है।

मालिकि यौमिद्दीन।

रोज़े आख़िरत का मालिक है (जिसमें कर्मों का फ़ैसला किया जायेगा और हर एक को उसके किए का बदला मिलेगा)

इय्या–क नअ़बुदु व इय्या–क नस्तई़न

मालिक! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद माँगते हैं।

इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम ।

हमको सीधा रास्ता दिखा

सिरातल लज़ी–न अनअ़म–त अ़लैहिम

ऐसे लोगों का रास्ता जिनपर तूने फ़ज्ल किया और इनाम फरमाया।

ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम व लज़्ज़ाल्लीन।

जिनपर तेरा ग़ज़ब नाज़िल नहीं हुआ और जो भटके हुए लोग नहीं हैं।

अल माऊ़न

फ़जालिकल्लज़ी यदुउ़ज़ूल यतीम–

ऐसा ही आदमी यतीभ को धुत्कारता है

वला यहुज़्ज़ु अ़ला तआमिल मिसकीन

और मिसकीन को ख़ुद खाना खिलाना तो दूर रहा, दूसरों से भी यह कहना पसन्द नहीं करता कि गरीब को खाना खिला दो।

मिसाल के तौर पर कुरआन की यह सूरा (104:1–9) देखिये–

वैलुल्लिकुल्लि हु–म–ज़तिल लु–म–ज़ह।

अफ़सोस है उस शख़्स की हालत पर जो लोगों के ऐब ढूँढ़ता और उनपर आवाज़ें कसता है।

रूकू

अल्लाहु अकबर

अल्लाह सबसे बड़ा है।

सुब्हा–न रब्बियल अ़ज़ीम।

पाक है मेरा पालनहार जो बड़ा बुजुर्ग है। फिर सीधे खड़े होते हुए कहते हैं :

समि अ़ल्लाहु लिमन हमिदह।

अल्लाह ने सुन ली उस शख़्स की बात जिसने उसकी तारीफ़ बयान की।

और फिर खड़े होकर कहते हैं :

रब्बना लकल हम्द।

ऐ हमारे रब! तेरे ही लिए तारीफ़ है।

सजदा

फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए सजदे में गिर जाते हैं और बार–बार कहते हैं :

सुब्हा–न रब्बियल अ़ाला।

पाक है मेरा पालनहार जो सबसे आला व बरतर है।

अत्तहिय्यात

फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए सिर उठाते हैं और बड़े अदब से बैठकर यह पढ़ते हैं :

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्स–ल–वातु वत्तय्यिबातु ।

हमारी सलामियाँ, हमारी नमाज़ें और सारी पाकीज़ा बातें अल्लाह के लिए हैं।

अस्सलामु अ़लै–क अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व ब–र–कातुहू।

सलाम आप पर ऐ नबी! और अल्लाह की रहमत और बरकतें।

अस्मलामु अ़लैना व अ़ला इ़बादिल्लाहिस्सालिहीन।

सलामती हो हमपर और अल्लाह के सब नेक बन्दों पर।

अश्हदु अल्ला इला–ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन–न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुह।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्ल0) अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।

यह शहादत देते वक़्त आप शहादत की उँगली उठाते हैं, क्योंकि यह नमाज़ में आपके अक़ीदे का एलान है और उसको ज़बान से अदा करते वक़्त ख़ास तौर पर ध्यान और ज़ोर देने की ज़रूरत है। इसके बाद आप दरूद पढ़ते हैं–

दरूद

अल्लाहुम–म सल्लि अ़ला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मादिवँ, व अ़ला आलि मुहम्मदिन, कमा सल्लै–त अ़ला इबराही–म, व अ़ला आलि इबराही–म, इन्न–क हमीदुम्मजीद। अल्लाहुम–म बारिक अ़ला सय्यिदिना, व मौलाना मुहम्मदिवँ व अ़ला आलि मुहम्मदिन, कमा बारक–त अ़ला इबराही–म, व अ़ला आलि इबराही–म, इन्न–क हमीदुम्मजीद।

ख़ुदाया! रहमत फ़रमा हमारे सरदार और मौला मुहम्मद (सल्ल0) और उनकी आल पर, जिस तरह तूने रहमत फ़रमाई इबराहीम और आले इबराहीम पर, बेशक तू बेहतरीन ख़ूबियोंवाला और बुज़ुर्ग है। और ख़ुदाया! बरकत नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार और मौला मुहम्मद (सल्ल0) और उनकी आल पर, जिस तरह तूने बरकत नाज़िल फ़रमाई इबराहीम आले इबराहीम पर, बेशक तू बेहतरीन ख़ूबियोंवाला और बुज़ुर्ग है।

यह दरूद पढ़ने के बाद आप अल्लाह से दुआ करते हैं–

दुआ

अल्लाहुम–म इन्नी अऊ़ज़ु बि–क मिन अ़ज़ाबि जहन्न–म, व अऊ़ज़ु बिक मिन अ़जाबिल क़बरि, व अऊ़ज़ु बि–क मिन फ़ित–नतिल महया वल ममाति। व अऊ़ज़ु बि–क मिनल मा–स–मि, वल मग़रम।

ख़ुदाया! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ जहन्नम के अज़ाब से, और तेरी पनाह माँगता हूँ क़ब्र के अज़ाब से, और तेरी पनाह माँगता हूँ उस गुमराह करनेवाले दज्जाल के फ़ितने से जो ज़मीन पर छा जानेवाला है, और तेरी पनाह माँगता हूँ ज़िन्दगी और मौत के फ़ितने से। ख़ुदाया! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ बुरे आमाल की ज़िम्मेदारी और क़र्ज़दारी से।

सलाम

यह दुआ पढ़ने के बाद आपकी नमाज़ पूरी हो गई। अब आप मालिक के दरबार से वापस होते हैं, और वापस होकर पहला काम क्या करते हैं? यह कि दाएँ और बाएँ मुड़कर तमाम हाज़िरीन और दुनिया की हर चीज़ के लिए सलामती और रहमत की दुआ करते हैं–

अस्मलामु अ़लैकुम व रह्मतुल्लाह।

आप पर सलामती हो और अल्लाह की रहमत।

अल्लाहुम–म इय्या–क नअ़बुदु व ल–क नुसल्ली व नस्जुदु व इलै–क नसआ़ व नहफ़िदु।

ख़ुदाया, हम तेरी ही बन्दगी करते हैं और तेरे ही लिए नमाज़ पढ़ते और सज्दा करते हैं और हमारी सारी कोशिशें और सारी दौड़–धूप तेरी ही ख़ुशी के लिए है।

व नरजू रह–म–त–क व नख़शा अ़जा–बक इन–न अ़ज़ा–ब–क बिल कुफ़्फ़ारि मुलहिक़।

और हम तेरी ही रहमत के उम्मीदवार हैं और तेरे अज़ाब से डरते हैं। बेशक तेरा सख़्त अज़ाब ऐसे लोगों पर पड़ेगा जो नाफ़रमान हैं।